

**एकांत पुं.** (तत्.) 1. निर्जन अथवा सूना (स्थान)  
2. अकेलापन, तनहाई 3. एक को छोड़कर  
किसी अन्य की ओर ध्यान न देने वाला, जैसे-  
वह रुद्र का 'एकांत' भक्त है पुं. ऐसा स्थान  
जहाँ कोई न हो, निर्जन स्थान।

**एकांतता स्त्री.** (तत्.) एकांत होने की अवस्था  
अथवा भाव, अकेलापन, तनहाई।

**एकांतर वि.** (तत्.) प्रशा. किसी शृंखला में एक के  
बाद एक छोड़कर आने या घटने वाला।  
alternate 1. एक को छोड़कर अगला 2. बीच  
में एक को छोड़कर अगला जैसे 1, 3, 5, 7  
एकांतर संख्याएँ हैं, तथा सोम, बुध, शुक्र  
एकांतर दिवस हैं। alternate numbers, alternate  
days

**एकांतरकोण वि.** (तत्.) गणि. दो समांतर रेखाओं  
को छेदने वाली रेखा पर बने आसन्नकोण  
जो विपरीत दिशाओं में होते हैं एकांतर कोण  
कहलाते हैं। alternate angle

**एकांतवाद वि.** (तत्.) दर्श. अद्वैतवाद,  
एकात्मवाद, जीवात्मा-परमात्मा की अभेदता का  
सिद्धांत।

**एकांतवास पुं.** (तत्.) 1. एकांत अर्थात् निर्जन  
स्थान में निवास करने की क्रिया या भाव 2.  
संन्यास लेना 3. अकेला रहना 4. संन्यासियों  
द्वारा कुछ दिन अकेले एकांत में समय बिताने  
का व्रत।

**एकांतवासी वि.** (तत्.) 1. एकांत, निर्जन स्थान  
में रहने वाला 2. एकांतवास करने वाला स्त्री.  
एकांत वासिनी।

**एकांतस्वरूप वि.** (तत्.) अकेले रहने की प्रवृत्ति  
वाला, जो किसी के साथ मिलना-जुलना नहीं  
करता, निर्लिप्त।

**एकांश पुं** (तत्.) 1. एक अंश, एक भाग या  
हिस्सा 2. इकाई। unit

**एकांश भिन्न स्त्री.** (तत्.) गणि. सरल भिन्न  
जिसका अंश सदैव एक हो, जैसे-  $1/2$ ,  $1/3$ ,  
 $1/4$  आदि।

**एका पुं.** (तत्.) एकता, संगठन, ऐक्य, मेल।

**एकाएक क्रि.वि.** (देश.) अकस्मात्, अचानक,  
सहसा।

**एकाएकी अव्य.** (देश.) अचानक, अकस्मात्,  
सहसा, एकाएक।

**एकाकार वि.** (तत्.) जो आपस में मिलकर एक  
हो गया हो, भेद का अभाव।

**एकाकिनी वि.** (तद्.) अकेली।

**एकाकी वि.** (तत्.) अकेला, जिसके साथ कोई  
और न हो।

**एकाकीपन पुं.** (तत्.) अकेलापन, अलगाव,  
एकांत।

**एकाक्ष वि.** (तत्.) 1. एक आंख वाला, काना 2.  
एक ही धुरी वाला 3. कौवा, काग 4. दैत्यगुरु  
शुक्राचार्य, 5. समदर्शी 6. सुई।

**एकाक्षर वि.** (तत्.) एक अक्षर वाला पुं. एकाक्षर  
मंत्र, प्रणव, ओम्।

**एकाक्षरी कोश पुं.** (तत्.) वह कोश जिसमें केवल  
अक्षरों (स्वर, व्यंजन) के विविध अर्थ दिए गए  
हों।

**एकाक्ष रुद्राक्ष पुं.** (तत्.) एक मुखी रुद्राक्ष।

**एकाग्र वि.** (तत्.) किसी एक ही विषय पर ध्यान  
केंद्रित करने वाला, ध्यानस्थ, अनन्यचित्त।

**एकाग्रचित्त वि.** (तत्.) स्थिरचित्त, जिसका मन  
पूरी तरह एक ही ओर लगा हो, लीनचित्त।

**एकाग्रता स्त्री.** (तत्.) 1. एकाग्र होने की अवस्था  
या भाव, चित्त की स्थिरता, मन की तल्लीनता,  
अचंचलता 2. (योग दर्शन के अनुसार) चित्त  
की वह अवस्था जिसमें अस्थिरता नहीं रह  
जाती।

**एकाग्रभूमि स्त्री.** (तत्.) योग. मन की वह  
अवस्था जिसमें बाह्य वृत्तियों का निरोध होने  
से वह किसी विषय से एकाकार या तन्मय हो  
जाता है।